

## कटक रूपा ताराकासी को GI टैग

स्रोत: [द हट्टि](#)

प्रसिद्ध कटक रूपा ताराकासी (सलिवर फलिग्री) को इसकी वशिष्ट वरिष्ठ और शिल्प कौशल को चिह्नित करते हुए [भौगोलिक संकेत \(Geographical Indication \(GI\) टैग](#) प्रदान किया गया है।

- इसका इतिहास प्राचीन **मेसोपोटामिया** से है, जहाँ 3500 ईसा पूर्व में फलिग्री से आभूषण सजाए जाते थे, फारस और इंडोनेशिया के रास्ते कटक तक की इसकी यात्रा समुद्री व्यापार मार्गों के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान के बारे में जानकारी प्रदान करती है।
  - फलिग्री वशिष्ट रूप से सोने, चाँदी या ताँबे के महीन तार का सजावटी काम है जिसका उपयोग मुख्य रूप से सोने और चाँदी की सतहों पर किया जाता है।
- कटक रूपा ताराकासी के साथ-साथ **बांग्लार मलमल (पश्चिम बंगाल)**, **नरसापुर क्रोकेट लेस (आंध्र प्रदेश)** और **कच्छ रोगन शिल्प (गुजरात)** जैसे अन्य शिल्पों ने भी भारत के पारंपरिक शिल्प की विविधता एवं उत्कृष्टता पर बल देते हुए GI दर्जा हासिल किया है।
- GI टैग एक वशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से जुड़े उत्पादों पर इस्तेमाल किया जाने वाला एक लेबल है जो यह सुनिश्चित करता है कि केवल उस क्षेत्र के अधिकृत उपयोगकर्ता ही उत्पाद के नाम का उपयोग कर सकते हैं।
  - यह नकल से बचाता है और एक बार पंजीकृत होने के बाद **10 साल** तक वैध होता है।
  - उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (DPIIT) [ट्रिपिस समझौते](#) के अनुरूप [वस्तुओं के भौगोलिक संकेतक \(पंजीयन एवं संरक्षण\) अधिनियम, 1999](#) के तहत भारत में GI पंजीकरण का प्रबंधन करता है।



और पढ़ें: [भौगोलिक संकेतक](#)

